गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रकाशित

ISSN : 2321-8037
जनवरी-फरवरी-2022
Vol. 10, Issue 1-2

Impact Factor : 2.636

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

संपादक :
डॉ. रेखा सोनी

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का मासिक संगम

20. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के ध्यान और योग का उनके व्यक्तित्व विकास व शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन	डॉ. रेखा सोनी, सुनील कुमार	96-102
21. सन्त परमानन्द जी के साहित्य में सामाजिक चेतना : विविध आयाम	डॉ. नरेश कुमार सिहाग	103-108
22. वैज्ञानिक संवेदना का निकष : नंदकिशोर आचार्य का काव्य	किरण भादू	109-113
23. श्री बनारसी दास जी के काव्य में जैन दर्शन	डॉ. मुकेश कुमार शर्मा	114-118
24. प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी समस्या	डॉ0 निरूपम शर्मा	119-122
25. हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. विशु मेघनानी	123-124
26. फिल्म रूपांतरण - पाठ और प्रदर्शन की अंतर्क्रिया	डा0 जगदीश चन्द्र जोशी	125-129
27. समकालीन मूर्तिकारों की प्रयोग धर्मिता और उनके शिल्पगत प्रभाव	डा0 भावना	130-133
28. मोहन राकेश कृत 'मिस पाल' की कथावस्तु और पात्र	विवेक काकड़ा	134-136
29. Communication Skill in 21st Century	कर्रि सुनीता	137-140
30. प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में कैरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन	Dr. Md Afaque Hashmi, Lopamudra Halider	141-146
31. मीराबाई और स्त्री विमर्श	डॉ. वन्दना दुआ, बिन्दिया	147-150
32. कोविड-19 और मानवीय संवेदनाएँ	डॉ0 अशोक कुमार	151-158
33. पानी केरा बुदबुदा में अभिव्यक्त मानवीय भावबोध	डॉ0 शैलजा रानी अग्निहोत्री	159-163
34. मानवतावाद की साक्षात् मूर्ति कबीरदास : एक विश्लेषण	सविता रानी	164-168
35. मध्यकालीन हिंदी साहित्य में संत कवयित्रियां : एक विवेचन	राजदीप कौर	167-170
36. नाट्यालोचक गोविन्द चातक और उनके आलोचनात्मक प्रतिमान	नरेश कुमार	171-175
37. आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर	डॉ. दीपक	176-183
	डॉ. पुष्कर सिंह	

संगम Impact Factor : 2.636
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed & Referred Journal
मीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध की समर्पित मासिक
ISSN : [illegible]
SANGAM
Vol. 16, Issue [illegible]
पृष्ठ [illegible]

मीराबाई और स्त्री विमर्श

-डॉ0 अशोक कुमार
सहायक प्राध्यापक हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, बंजार, हि0 प्र0।

कृष्ण भक्ति शाखा की हिन्दी की महान कवयित्री और प्रेम की अनन्य पुजारिन मीराबाई की [illegible] काव्य मे एक विशिष्ट स्थान है। यह जोधपुर नगर बसाने वाले राव जोधा जी के चतुर्थ पुत्र राव दूदा के [illegible] पुत्र रत्न सिंह की इकलौती संतान थी। इनका जन्म मेड़ता के कुड़की गांव में सन 1498 ई0 में हुआ। कुछ विद्वान इनका जनम मेडता के पास चौकड़ी ग्राम और कुछ पाण्डलू ग्राम मानते है। इनके दादा राव दूदा बड़े उदार आध्यात्मिक एव धार्मिक प्रवृति के थे, जिनका प्रभाव मीरा के जीवन पर पड़ा। बाल्यावस्था में इनकी माता फिर दादा, पति भोजराज, ससुर राणा सांगा और पिता रत्नसेन की मृत्यु हो गई। मीराबाई [illegible] उम्र की थी तब उनके जीवन में जो महत्वपूर्ण व्यक्ति थे उनकी मृत्यु हो गई। युवावस्था में प्राप्त दुःखद वैधव्य के कारण वह सांसारिक बंधनों से मुक्त हो कर कृष्ण की भक्ति में लीन रहने लगी। साहित्य में साहित्यकार जब युगीन यथार्थ का चित्रण करता है तो इसका पहला लक्ष्य तदयुगीन विकृतियों, विषमताओं और [illegible] का विश्लेषण कर उनका समाधान खोजता है।

दूसरा लक्ष्य अपने विचार से भावी पीढ़ी के अच्छे भविष्य के निर्माण के लिए उचित मार्ग दर्शन करना। मीराबाई के युग में नारी आत्मभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र नहीं थी। कुछ मनुवादी लोग स्वयं को समाज का नियन्ता मानकर यह उदघोष कर रहे थे कि नारी माया है, पुरुष के पतन के लिए खाई है, इसलिए सदगृहिणी बन कर गृहस्थ के सदस्यों की सेवा करना और पतिव्रता नारी बनकर पूजा करना ही उसका कार्य है। स्त्री के सुख-दुख वर्तमान और भविष्य की आकांक्षाएं पुरुष समाज द्वारा प्रत्यारोपित किए जाते थे। मीरा के काव्य स्त्री विमर्श की गूंज स्पष्ट अनुभव की जा सकती है। विमर्श का अर्थ है "विचार, विवेचन, परीक्षण, समीक्षा और तर्क किसी भी समस्या का विभिन्न दृष्टियों और मानसिकता से मूल्यांकन कर समग्रता से समझने और समझाने की [illegible] करना। इस प्रकार स्त्री विमर्श का अर्थ है कि स्त्री को केन्द्र में रखकर तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों का परीक्षण करते हुए मानवीय दृष्टि से विचार करने की प्रक्रिया।

"स्त्री विमर्श का सरोकार जीवन और साहित्य में स्त्री मुक्ति के प्रयासों से है। स्त्री की स्थिति के [illegible] उसके संघर्ष एवं पीड़ा की अभिव्यक्ति के साथ-साथ बदलते सामाजिक सन्दर्भों में उसकी भूमिका [illegible] रास्तों के कारण जन्मे नए प्रश्नों से टकराने के साथ-साथ आज भी स्त्री की मुक्ति का मूल प्रश्न उसके [illegible] रूप में अस्वीकार जाने का प्रश्न ही है।" स्त्री विमर्श नारी अस्मिता का एक आंदोलन है जो पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में नारी को दूसरे दर्जे का प्राणी मानने का विरोध कर नारी गरिमा को पुनर्प्रतिष्ठित करने [illegible]